सरसों के प्रमुख रोग : सरसों में लगने वाले प्रमुख रोगों में काला धब्बा या पर्ण चित्ती, सफेद रतुआ या श्वेत किट्ट, चूर्णल आसिता, तना गलन एवं स्टैग हेड़ है जिसका नियंत्रण आवश्यक होता है।

नियंत्रण : रिडोमिल फफूँदी नाशक का 0.2% घोल का 15 दिनों के अन्तराल पर दो छिड़काव करने से अधिकांश रोगों का नियंत्रण हो जाता है। चुर्णत आसिता के नियंत्रण के लिए घुलनशील सल्फर की 0.2% घोल का छिड़काव करें जबकि तनागलन के लक्षण दिखने पर कार्बेन्डाजिम (0.1%) का 2 छिड़काव करें।

अन्तः फसल : झारखण्ड में सरसों के साथ उपयुक्त अन्तः फसल प्रणाली निम्न है।

गेहूँ + सरसों (5 : 1) या (8 : 2)
चना + सरसों (3 : 1)
मटर + सरसों (5 : 1)

कटाई : जब 75% फलियाँ सुनहले या पीली हो जाय तब फसल की कटाई करें। कटाई में देरी करने से बीज भार एवं तेल अंश में कमी होती है। फसल की कटाई सुबह करने से बीज का बिखराव कम होता है।

मड़ाई/गहाई : फसल की मड़ई हेतु बंडलों को खलिहान में एक सप्ताह तक सुखा लें। जब बीजों में औषत नमी 12–15% तक हो जाय तक फसल की मड़ाई करें। ओसाई कर बीजों को साफ कर लें एवं सुखाकर 8% नमी पर भंडारण साफ बोरों में करें।

उपज : सरसों की औसत उपज सिंचित अवस्था के 12–15 क्विंटल तथा असिंचित अवस्था में 6–8 क्विंटल प्रति हेक्टर होती है।

आलेख

1. डा0 राजीव कुमार, वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान
2. श्री उदय कुमार सिंह, वैज्ञानिक (सस्य)
3. ई0 विनोद कुमार पाण्डेय, वैज्ञानिक (कृषि अभियंत्रण)

मार्गदर्शन

निदेशक प्रसार शिक्षा
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची

सरसों रबी मौसम की प्रमुख तेलहनी फसल है। सरसों में लगभग 42% तेल होता है। झारखण्ड की जलवायु एवं मिट्टी सरसों की खेती के लिए काफी उपयुक्त है। यहाँ सरसों की खेती कम सिंचाई एवं लागत में दूसरी फसलों की अपेक्षा अधिक लाभप्रद सिद्ध हो रही है। इसलिए किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय होती जा रही है। इसकी खेती मिश्रित रूप में और दो फसलीय चक्र में आसानी से की जा सकती है। झारखंण्ड में सरसों की खेती शुद्ध फसल के रूप में न ले कर गेहूँ, चना, आलू, मटर इत्यादि के साथ मिश्रित फसल के रूप करते है इसलिए यहाँ इसकी उत्पादकता काफी कम है। सरसों के उत्पादकता कम होने के मुख्य कारक है:– उपयुक्त किस्मो का चयन नहीं करना, असंतुलित उर्वरक का प्रयोग, पादप रोगों व कीटों की प्रयाप्त रोकथाम न करना, शुद्ध फसल की रूप में खेती न करना एवं देरी से बुआई करना।

सरसों की खेती उन्नत तकनीक के साथ वैज्ञानिक तरीकों से की जाए तो इसकी उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ा सकते है।

भूमि का चुनाव : समतल तथा अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट से दोमट मिट्टी जिसकी जल धारण की क्षमता अधिक हो, फसल के लिए उपयुक्त है। अच्छी पैदावार के लिए जमीन का पी0 एच0 मान 7.0 होना चाहिए। बोआई से पहले खेत को 2–3 बार जुताई करके मिट्टी को भुर–भुरी कर लेनी चाहिए। जुताई के बाद पाटा चलाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए। अंतिम जुताई के समय 1.5% क्यूनौलफॉस 25 किग्रा / हेक्टर की दर से मिट्टी में मिला दें जिससे भूमिगत कीड़ो की रोकथाम हो सके।

उन्नत प्रभेद : मिट्टी की किस्म, बोआई के समय एवं सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर उपयुक्त किस्मों का चयन करना चाहिए। सरसों की विभिन्न परिस्थितीयों में अनुशंसित प्रभेद निम्न है–

कृषि विज्ञान केन्द्र, पलामू
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

Scanned with OKEN Scanner

प्रभेद	पकने की अवधि (दिन)	औसत उपज क्षमता क्विंटल/हे०	तेल प्रतिशत	उपयुक्तता
पूसा सरसों–28 (NPJ-124)	107-110	16 -18.0	41.7	सिंचित अवस्था, अगेती बोआई
पूसा सरसों–25 (NPJ-112)	107-110	12 -15.0	40.0	अगेती बोआई, कम अवधि, सिंचित अवस्था के लिए
शियानी	115-120	12-17.0	40.0	समय एवं देरी में बोआई के लिए
पूसा अग्रणी (SEJ-2)	110-115	15 -17.0	40.0	अगेती बोआई
पूसा महक	110-115	10 -12	40.0	अगेती एवं पछेती दोनों के लिए
NRCHB 101	120-125	12 -15.0	40.0	पछेती बोआई सिंचित अवस्था।
NRCDR-2	130-150	20 -25	42	सिंचित अवस्था समय से बोआई
पूसा बोल्ड	110-140	18 -20	40	समय से सिंचित अवस्था
पूसा जया किसान (बायो 902)	120-130	16 -20	40%	समय से सिंचित अवस्था
क्रान्ति	125-135	15 -20	42%	समय से सिंचित अवस्था
पूसा सरसों –26 (NPJ113)	120-125	14 -16	38	पछेती बोआई
पूसा बहार	108-110	10 -12	42	असिंचित अवस्था
संकर किस्म –26 (NPCH B-506)	130-140	15 -25	41	सिंचित अवस्था समय से बोआई
बिरसा भाभा सरसो-1	114-121	16-18	39-42	समय से सिंचित अवस्था

बोआई का समय : बोआई के लिए उपयुक्त समय 20 सितम्बर से 20 अक्टूबर तक है। पछेती बोआई 15 नवम्बर तक सफलतापूर्वक लगाया जाता है। अच्छे अंकुरण के लिए बोआई के समय दिन का अधिकतम तापमान सामान्यत: औसतन 32°C से अधीक नहीं होना चाहिए। बुआई में अधिक देरी होने से फसल की उपज एवं तेल की मात्रा दोनों में कमी आती है।

बीज की मात्रा : 5.0 किलोग्राम प्रति हेक्टर।

बीज उपचार : फफूँद जनित रोगों से बचाव के लिए बोआई से पहले कार्बेण्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करना चाहिए।

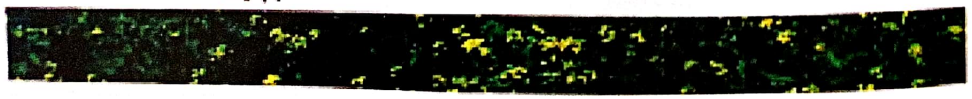

बुआई की दूरी : कतार से कतार – 30 सेमी०
पौधो से पौधो – 10 सेमी०
गहराई – 2–3 सेमी०

पौधों का विरलीकरण (Thinning) : खेतों में पौधों की उचित संख्या एवं समान पौधा बढ़वार के लिए बोआई के 15–20 दिन बाद कमजोर पौधा को निकालकर विरलीकरण आवश्य रूप से करना चाहिए जिससे पौधे उचित दूरी पर (30 x 10 से.मी.) हो सके।

उर्वरकों की मात्रा एवं उपयोग : एक हेक्टर में सिंचित अवस्था में 80 कि.ग्रा. नेत्रजन, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश तथा 40 कि.ग्रा. सल्फर की दर से तथा असिंचित अवस्था में 40 कि. ग्रा. नेत्रजन, 20 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश एवं 20 कि.ग्रा. सल्फर की आवश्यकता होती है। सिंचित अवस्था में नत्रजन की आधी मात्रा व फॉस्फोरस, पोटाश व सल्फर की पूरी मात्रा को बोआई की समय तथा शेष आधी नेत्रजन को पहली सिंचाई करने के बाद प्रयाप्त नमी रहने पर डालना (Top dressing) चाहिए। असिंचित फसल में सभी पोषक तत्वों की पुरी मात्रा को बोआई के समय ही डाला जाता है। सल्फर सरसों में तेल की मात्रा व गुणवत्ता को बढ़ाने के साथ–साथ पौधों में रोग प्रतिरोधकता भी बढ़ाता है। नत्रजन एवं फॉस्फोरस की पूर्ति यदि अमोनियम सल्फेट व सिंगल–सुपर फॉस्फेट से की जाय तो सल्फर इन दोनों में उपलब्ध हो जाता है। बोरोन की कमी रहने पर 10 कि.ग्रा. प्रतिहेक्टर की दर से बोरेक्स बोआई के पहले उपयोग करने से उपज में वृद्धि होती है।

खर-पतवार नियंत्रण : खर पतवार होने से उपज में कमी होने के साथ–साथ पौधों में कीट एवं बिमारीयों का प्रकोप भी बढ़ जाता है। इसलिए अच्छी पैदावार के लिए बुआई के 20–25 दिनों बाद खुरपी या हो से निकोनी कर लेनी चाहिए। खरपतवार के रसायनिक नियंत्रण करने के लिए फ्लूक्लोरोलीन 45 ई0सी0 दवा की 1 लीटर सक्रिया तत्व (2.2 ली0 दवा) प्रति हेक्टर की दर से 800 ली0 पानी में मिलाकर बुआई के पहले छिड़काव कर मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए अथवा पेन्डीमिथेलीन 30 ई0सी0 की 1 ली0 सक्रिय तत्व (3.3 ली0 दवा) को 800 ली0 पानी में मिलाकर बुआई के तुरन्त बाद (बुआई के 1–2 दिन के अन्दर) छिड़काव करना चाहिए

सिंचाई : जल के उपलब्धता के अनुसार 2 से 3 सिंचाई सरसों के लिए उपयुक्त है। पहली सिंचाई बेआई के 25–30 दिनों के अन्दर करना चाहिए जिससे पौधे की अच्छी वृद्धि हो सके। दूसरी सिंचाई फूल आने पर तथा तिसरी सिंचाई बोआई के 80–90 दिनों बाद फली बनते समय करना चाहिए।

कीट नियंत्रण : लाही या मोंहू (Aphids), आरामक्खी, चितकबरा कीट, लीफ माइनर, बिहार हेयरी कैटरपिलर आदि सरसों के प्रमुख कीट है जिसमें लाही से सबसे अधिक नुकसान होता है।
प्रबंधन के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8% SL का 1 मि.ली./ली. पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

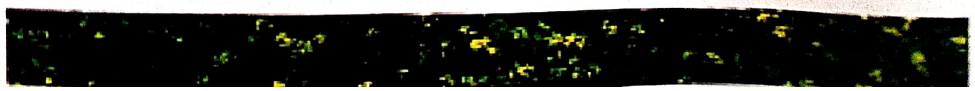

Scanned with OKEN Scanner